14 / 09 / 75 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

अकाल तख्त-नशीन और महाकाल-मूर्त

बन समेटने की शक्ति का प्रयोग करने का अनुभव

➢➢ मैं अकाल तख्त-नशीन आत्मा हूँ

➳_➳ मैं भृकुटी सिहासन पर विराजमान चैतन्य सितारा अकाल तख्त-नशीन आत्मा हूँ

→ मैं आत्मा पांच तत्वों से बने इस जड़ शरीर की

■ सर्व कर्मेन्द्रियो की भी मालिक हूँ

· मुझ आत्मा की सभी कर्मेन्द्रिया शीतल है

· सभी चंचलता समाप्त हो गई है

· और अवस्था एकरस बन गई है

→ मैं आत्मा अकाल हूँ, तो मुझ आत्मा का तख़्त भी अकाल तख्त है

■ इसी तख्त पर बैठकर मैं आत्मा सभी कार्य कुशलतापूर्वक कर रही हूँ

· "मैं आत्मा तख़्त-नशीन हूँ"

→ तख्त-नशीन माना "मैं आत्मा स्वराज्य अधिकारी राजा हूँ"

■ इस स्मृति में रहने से मुझ आत्मा की कर्मेन्द्रिया भी स्वतः ही आर्डर प्रमाण कार्य कर रही है

➢➢ मैं आत्मा महाकाल-मूर्त हूँ

➳_➳ मै आत्मा फरिश्ता ड्रेस धारण कर अपने अलौकिक वतन की ओर जा रही हूँ

→ मै फरिश्ता फरिश्तों के नगरी के समीप पहुंच रही हूँ

■ आकरी लाइट के रूप का चमत्कारी हल्का ड्रेस

■ और मेरे मीठा बाबा निराकार वतन निवासी व्यक्त ब्रह्मा के तन में प्रवेश हो रहे हैं

· खुली आँखों से मैं बाप दादा की दृष्टि ले रही हूँ

· कल्प कल्प का प्यार देने वाले बापदादा एक जन्म में 84 जन्मों का सुख दे रहे है

→ मैं आत्मा आनेवाली विकराल परिस्थितियों का सामना

■ अपनी मास्टर सर्वशक्तिवान की स्थिति में स्थित हो सहज पार कर रही हूँ

· दिन प्रतिदिन प्रकृति द्वारा भी विकराल रूप से परिस्थिया तो आयेगी ही

· एक ही समय पर माया और प्रकृति के सभी तत्व एक साथ और अचानक वार करेंगे

□ किसी भी प्रकार के प्रकृति के साधन बचाव के काम के नहीं रहेंगे

□ और ही साधन समस्या रुप बनेगे

→ ऐसे समय में इनका सामना करने के लिये मैं आत्मा अकाल-तख्त नशीन अकालमूर्त बन

■ महाकाल बाप के साथ साथ "मास्टर महाकाल" स्वरूप में स्थित हों

□ इन परिस्थितियों का सामना कर रही हूँ

→ बाबा अपना वरदानी हाथ मेरे सिर पर रख

■ मास्टर सर्व शक्तिमान भवः

■ विजयी भवः

■ सफलता मूर्त भवः

■ मास्टर महाकाल भवः

□ के वरदानो से मुझ आत्मा की बुधि रुपी झोली भर रहे है

➢➢ समेटने की शक्ति का अनुभव

➳_ ➳ बापदादा मुझ आत्मा को थोडा हल्का करने सैर पर ले जाते है

→ और कहते है बच्चे डर तो नई गये हो ना ????

■ मै आत्मा कहती हु नई बाबा जब आप मेरे साथ हो तो मुझे किस बात का डर और किस बात की चिंता

· इन विकराल परिस्थितियों का सामना करने के लिये मैं आत्मा स्वयं में समेटने की शक्ति की बढ़ा रही हूँ

→ अपने देह-अभिमान के संकल्प

→ देह की दुनिया की परिस्थिति

→ शरीर के संबंध

→ शरीर और शरीर के सर्व सम्पर्क की वस्तु

→ आवश्यक साधन

■ इन सभी संकल्पों को क्या होगा ?? कब होगा ?? ऐसा क्यों हुआ ??

· इन सभी हलचल के संकल्पों को समेट रही हूँ

→ "अब हमे वापस घर जाना है..."

■ इस एक संकल्प के आलावा और कोई दूसरा संकल्प अब मैं आत्मा संकल्प में भी नही आने देती हूँ

· अब मुझ आत्मा को संकल्प में भी यही धुन रहती है की,

· "अब मुझ आत्मा को जल्द से जल्द अपने घर जाना है"

· शरीर का कोई भी संबंध व् सम्पर्क अब मुझआत्मा को निचे ला ही नहीं सकता है

- मैं आत्मा सर्व बन्धनों से मुक्त आत्मा हूँ
- मैं आत्मा प्रकृति को भी अधीन करने वाली अधिकारी आत्मा हूँ

→ बाबा से स्नेह भरी द्रष्टि की लेन देन कर स्वयं में द्रष्टि से बल भर

- अब मैं और बापदादा मिलकर संसार की सभी आत्माओ को
  - शांति और शक्ति की सकाश दे रहे है
  - सारे वातावरण में प्रेम के प्रकम्पन फैलाती हुई
  - मैं आत्मा वापस अपने देह में प्रवेश कर रही हूँ